Table of Contents

1. [illegible]

[illegible]

[illegible]


भारत
INDIA
कबीर Kabir
1500
2004

□□□□□ □□□□□

- □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□
- □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ - □□□□ □□□□□□□□□□
- □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□

पाठ्य प्रमाण / उदाहरण

"साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदे साँच है, ता हिरदे गुरु आप।।"

"बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर।।"

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।"

"अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।
अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।।"

"ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय।।"

"निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय।।"

"साधू ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।
सार-सार को गहि रहै, थोथा देइ उड़ाय।।"

"कबिरा मन पंछी भया, भावै तहवाँ जाय।
जो जैसी संगति करै, सो तैसा फल पाय।।"

Prepzy

हल किए गए उदाहरण

प्रश्न: कबीर के दोहों में जीवन का कौन सा संदेश मिलता है?

उत्तर : कबीर के दोहों में जीवन की सच्चाई, सादगी, और आध्यात्मिकता का संदेश मिलता है। वे झूठ और पाप से दूर रहने, गुरु और ईश्वर की महत्ता समझाने, और सही संगति के महत्व को बताते हैं।

अभ्यास प्रश्न

स्तर 1 – सरल

- कबीर का जन्म कहाँ हुआ था?
- "साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप" का अर्थ क्या है?
- कबीर के दोहों में गुरु का क्या स्थान है?

स्तर 2 – मध्यम

- "बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर" दोहे का विश्लेषण करें।
- कबीर के दोहों में अति के विषय में क्या कहा गया है?
- "निंदक नियरे राखिए" दोहे का सामाजिक महत्व समझाइए।

स्तर 3 – कठिन

- कबीर के दोहों के माध्यम से उनके जीवन दर्शन और समाज सुधार की दृष्टि पर विस्तृत निबंध लिखिए।
- कबीर के दोहों में प्रयुक्त अलंकारों का उदाहरण देते हुए उनकी व्याख्या कीजिए।

उत्तर कुंजी

- कबीर का जन्म काशी में हुआ था।
- यह दोहा कहता है कि सच्चाई का तप (कठोर तपस्या) के बराबर महत्व है और झूठ पाप के समान है।
- गुरु को ईश्वर के समान माना गया है जो जीवन का मार्गदर्शन करता है।
- यह दोहा दिखाता है कि बड़ा होना केवल नाम का होता है, यदि वह दूसरों को लाभ न पहुंचाए तो उसका कोई महत्व नहीं।

Prepzy

- अति का भला नहीं होता, न बोलने में न चुप रहने में। संतुलन आवश्यक है।
- निंदक को अपने निकट रखना चाहिए क्योंकि वह बिना किसी स्वार्थ के सुधार करता है।

त्वरित संदर्भ

- कबीर की रचनाएँ जीवन के सरल और गहरे सत्य को दर्शाती हैं।
- उनके दोहे सामाजिक और आध्यात्मिक सुधार के लिए प्रेरित करते हैं।
- सत्य, गुरु, संगति, और संतुलन उनके प्रमुख विषय हैं।

शब्दावली

- **करघा :** कपड़ा बुनने की मशीन।
- **भजन:** धार्मिक गीत।
- **साँच :** सत्य।
- **पाप :** बुराई या गलत कर्म।
- **गुरु :** शिक्षक या मार्गदर्शक।
- **अति:** अधिकता।
- **निंदक:** जो दोष बताता है।
- **सूप :** अनाज छानने का उपकरण, यहाँ गुणी व्यक्ति के लिए उपमा।

Prepzy